वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नारी–चेतना की अभिव्यक्ति

आदित्य प्रकाश खरे*

हिन्दी उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में पुरुष और नारी दोनों प्रकार के पात्र समाहित होते हैं। रचनाकार अपनी–अपनी दृष्टि से पात्रों को बाह्य और आंतरिक परिवेश के अनुकूल बल देकर चित्रित करने का उपक्रम करते हैं। इस लिहाज से देखें तो ऐतिहासिक उपन्यासकार वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यास साहित्य में नारी का स्थान सबल और किसी देवी से कम नही है। वर्मा जी ने नारी को पुरुष से कम नहीं आँका है। नारी के बाह्य सौंदर्य और लावण्य के परे उसमें निहित आंतरिक की खोज तथा उसके वाह्य तथा आंतरिक गुणों में सामंजस्य स्थापित करना उनका लक्ष्य रहा है। मूर्द्धन्य उपन्यासकार श्री वृंदावनलाल वर्मा का जन्म 9 जनवरी, 1889 ई. को मऊरानीपुर, झाँसी में एक कुलीन कायस्थ परिवार में हुआ था। इनकी इतिहास के प्रति रुचि बचपन से ही थी। अतः उन्होंने कानून की उच्च शिक्षा के साथ–साथ इतिहास, राजनीति, दर्शन, मनोविज्ञान, संगीत, मूर्तिकला तथा वास्तुकला का गहन अध्ययन किया। ऐतिहासिक उपन्यासों के कारण वर्माजी को सर्वाधिक ख्याति प्राप्त हुई। इन्होंने अपने उपन्यासों में इस कथन को झुठला दिया कि 'ऐतिहासिक उपन्यास में या तो इतिहास मर जाता है या उपन्यास', बल्कि उन्होंने इतिहास और उपन्यास दोनों को एक नई दृष्टि प्रदान की। इनके उपन्यासों में प्रमुख रूप से 'मृगनयनी', 'टूटे काँटे', 'झाँसी की रानी', 'गढ़ कुंडार', 'महारानी दुर्गावती', 'अमरबेल', 'कचनार', 'सोना', 'रामगढ़ की रानी', 'सोती आग', 'डूबता शंखनाद', 'लगन', 'कुंडलीचक्र' 'भुवनविक्रम', 'ललितादित्य', 'अहिल्याबाई', 'देवगढ़ की मुस्कान', 'संगम', 'प्रेम की भेट', 'अमर–ज्योति', 'कीचड़ और कमल' और 'आहत' आदि बेहद चर्चित हैं।

वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यास साहित्य में नारी पात्र पुरुष से कहीं ऊँचा स्थान रखती है। उनकी दृष्टि में पुरुष शक्ति है, तो नारी उसकी संचालक प्रेरणा हैं। डॉ. प्रभु दयाल शर्मा का अभिमत है कि, ''वृंदावन लाल वर्मा जी के साहित्य में नारियाँ आत्मोत्सर्ग कर्तव्य परायणता तथा देश प्रेम दायित्व की गुणों से विभूषित है और सर्वोपरि वर्मा जी ने अपने साहित्य में नारी के शौर्य, सम्मान, देशप्रेमी एवं साहसी रूप को चित्रित किया है, जो समय और परिस्थिति पर अपने राष्ट्र के प्रति अपने आपको न्योछावर करती हैं। वह शक्ति से परिपूर्ण हैं जो राष्ट्र एवं समाज के लिए आदर्श

***हिन्दी विभाग, महाराजा छात्रसाल महाविद्यालय, छतरपुर (मध्यप्रदेश)**

प्रस्तुत करती है।''[1] इनके प्रारंभिक उपन्यासों में नारी के विषय में धारणा कल्पनामय तथा रोमांटिक रही है। वह अपने प्रेमी के जीवन लक्ष्य की केंद्र में आकर उनकी पूजा–अर्चना की पावन प्रतिमा बन कर रह जाती तारा हैं। 'गढ़कुंण्डार' एवं विराटा की पद्मनी' नामक उपन्यासों में उपन्यासकार की प्रारम्भ प्रवृत्ति की देन है, वही 'गढ़कुंण्डार', 'अहिल्याबाई', 'मृगनयनी', 'देवगढ़ की मुस्कान', 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' जैसे उपन्यासों का सर्जन कर, यह संदेश दिया कि नारी सिर्फ अबला ही नहीं सबला भी है। इन उपन्यासों में नारी के गुण चरम पर दिखाई पड़ते हैं।

हालांकि वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नारी पात्र की और भी अनेक विशेषताएँ है। इनके उपन्यासों में नारी पात्र संघर्षमयी, कठोर और दृढ़ निश्चय से भरी हुई हैं। ये नारी मात्र पुरुष की प्रेरणा ही नहीं, अपितु इस जगत के संघर्ष जूझती हुई अपने आदर्श को प्रस्तुत करती हैं। लाखी (कचनार), रूपा (सोना), नूरबाई (टूटेकाँटे) आदि उपन्यासों में नारी के विस्तृत चरित्र को दर्शाया गया है। एक जहाँ स्त्रियों को अबला माना जाता था, वहीं वर्मा जी ने अपने इन उपन्यासों में नारियों को सबला के रूप में चित्र किया है। उपन्यासकार का विचार है कि पुरुष समाज का मस्तिष्क है नारी हृदय। जीवन की व्यवहारिक क्षेत्र में भी नारी पुरुष सदैव अग्रणी रही है,यह नारी समाज की सूत्र धारिणी भी है। सामाजिक ढांचे का अस्तित्व नारी पर अवलंबित है। प्रत्येक युग में लेखकों एवं सुधारकों की .ष्टि नारी के पक्ष को ही अवलंब क्यों बनाती है? इसका उत्तर यह है कि अन्वेषक की .ष्टि सदैव समाजके दुर्बल पक्ष पर केन्द्रित होती है, जो मूल होते हुए भी उपेक्षित कर दिया जाता है। ''युगीन परिस्थितियों का प्रभाव वर्मा जी की के साहित्य साधना पर ही पड़ा। वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों के सर्जन का मूलाधार नारी जागृति ही था।''[2] वर्मा जी की सूक्ष्म दृष्टि में केवल नारी के केवल सौंदर्य का वर्णन ही नहीं किया गया अपितु आंतरिक पक्ष के माध्यम से नारी के आदर्श गुणों को भी खोज कर निकाला गया है, इन्हीं गुणों के कारण नारियाँ पुरुषों से कहीं ऊंची दिखाई पड़ती है। हेमवती, तारा, कुमुद, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, कचनार, अहिल्याबाई आदि नारियाँ त्याग, आदर्श प्रेम, स्वाभिमान, कर्तव्यपालन, सहृदय प्रेरणाशील, उग्र स्वभाव आदि विशेषताओं से भी विभूषित हैं।

प्रेम मानव की चिरंतन भावना है, जिसका उद्गम आत्मानुभूति से होती है और इसके अभाव में कोई भी इन्द्रिय व्यापार सम्भव ही नहीं होता है। माँ की ममता, भाई का स्नेह, पति–पत्नी के बीच आत्मीय प्रेमी, मित्रों से प्रतीति आदि सभी भाव इसी प्रेम के ढाई अक्षर में समाहित हो जाते हैं। इस सम्बंध में कबीर भी कहते हैं कि, 'ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय'। इसी प्रेम में नारी का अस्तित्व और आत्म–सम्मान भी समाहित है। जिसकी आंतरिक प्रतिरोध की भावना को एक सच्चा साहित्यकार ही वाणी का स्वर देता है। इसी कड़ी में वृंदावनलाल वर्मा भी आते हैं, जिन्होंने स्त्रियों की भावना को बखूबी ढंग से चित्रित किया है। निश्चित

तौर पर वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यास की स्त्रियाँ वीर एवं साहस से परिपूर्ण हैं। इनमें आत्मसम्मान की भावना हेतु परस्पर परिस्थितियों के सामने विवश होते हुए भी आदर्श प्रेम को पुष्ट करने के लिए लड़ने में निर्भीकता है। अपने आत्मसम्मान की रक्षा केलिए अपने ही हाथों आत्महत्या ही क्यों न करनी पड़े किंतु अपनी स्वतंत्रता पर आँच नहीं आने देती हैं। वर्मा जी के उपन्यास की नारियाँ विषम परिस्थितियों में आँसू बहाना नहीं जानती हैं। बल्कि शक्ति व सामर्थ्य परिस्थिति का सामना करती हैं। बकौल, आक्रमण के समय नागदेव हेमवती को देखकर एकांत में मिलने की इच्छा व्यक्त करता है। हेमवती ओजपूर्ण शब्दों में खंगारों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया निम्न प्रकार व्यक्त करती है– ''आप कौन सी भाषा बोल रहे आप मुझे जानते हैं यदि आप यहाँ से नहीं जाते हैं तो यहाँ से मैं जाती हूँ बुन्देल कन्या न ऐसी भाषा सुन सकती है और न सह सकती है। खंगार राजा होने पर भी बुंदेलकन्या का अपमान करने की शक्ति नहीं रखता।''[3] हेमवती के समक्ष तारा का साहसी व्यक्तित्व भी स्पष्ट दिखाई देता है। दिवाकर को बंदी ग्रह से छुड़ाने के लिए पिता के विरोध का संघर्ष स्वीकार न करके अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देती है, स्वाभिमान के साथ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती हुई कहती है कि, ''मैं किसी से नहीं डरती मैं जाऊंगी यदि आप जाने से रोकेंगे तो मैं आत्महत्या कर लूँगी।''[4] देखा जाय तो सामंती समाज मे सबसे दीन–हीन स्थिति नारी की ही होती थी, जिसका अस्तित्व राजाओं की कृपा दृष्टि पर आश्रित होता था। जीवन की सार्थकता पुरूषों की वासनापूर्ति मे ही सीमित थी। सामंती समाज में लाखी, कुमुद, कचनार, नूराबाई आदि नारियों का जीवन जीना दूभर हो जाता है। राजाओं की स्वार्थ लिप्सा, कन्याओं का अपहरण, वासना तृप्ति की कामना एवं युद्ध की विभीषिका के फलस्वरूप नारी जीवन पर गर्दिश के बादल छाये रहते थें

वृंदावनलाल वर्मा का 'मृगनयनी' उपन्यास बहुत ही अनूठा उपन्यास है। इसमें रोमांस शब्द का विधा के रूप में नहीं अपितु एक विशेष प्रवृत्ति के रूप में प्रयोग हुआ है। जीवन में रोमांस वर्मा की जीवन सम्बन्धी धारणा का अभिन्न अंग है। इनका रोमांस दैनिक जीवन में व्याप्त एकरसता को ताजगी एवं स्फूर्ति के साथ नवीनता उत्पन्न करता है। स्त्री जीवन जीवन की स्वछंदता को लेकर उसके साधारण जीवन के धरातल से विवेक, सन्तुलन, एवं कर्मठता तथा अन्तर्दृष्टि द्वारा रोमांस को प्रेरित करने वाले प्रमुख तत्वों को समाहित कर जीवन के प्रति आत्मस्वाभिमान को दर्शाया गया है। इस उपन्यास में वर्माजी लिखते हैं कि बन्द खोलने पर गाय दी जाती दी जाती है। बेटी की विदाई समय बड़ा ही कारूणिक और मार्मिक होता है। इस अवसर पर सभी की आँखों में आँसू झलक आते हैं। यह दृश्य आज भी हमारे समाज और संस्कृति में देखा जाता है। इस उपन्यास में जहाँ मृगनयनी का गला रोते–रोते सूख जाता है, वहीं लाखी भी रूदन से अचेत हो जाती है।

'झाँसी की रानी' उपन्यास में राजा गंगाधर राव सामंती प्रवृत्ति के पोषक थे, जबकि लक्ष्मीबाई सामज के प्रति जागरूक थी। उनको जन सेवा ही सर्वोपरि

था। संकट के समय वे झाँसी की जनता की अस्मिता के लिए जूझ रही थी, जबकि राजा अपने स्वार्थ तक ही सीमित थे। लक्ष्मीबाई एक स्त्री होकर दुश्मनों से लड़ते हुए अपनी जान की बाजी लगा दी, लेकिन अपना आत्मस्वाभिमान झुकने नहीं दिया। इनकी साथ अन्य स्त्रियों ने भी जोरदार भूमिका निभायी। इसी प्रकार 'महारानी दुर्गावती' में स्त्री जीवन की अभिव्यक्ति को दर्शाया गया है। इसमें कलावती के विवाह के उपरांत जब वह अपने ससुराल पहुँचती है तब वहाँ पर भी अनेक रीतियों का निर्वाह किया जाता है। देवपूजन किया जाता है। स्त्रियों द्वारा गीत गाकर नव दम्पत्ति के सुखों की कामनाएँ की जाती हैं।

'ललितादित्य' उपन्यास में कमलावती के निकट खड़ी एक सखी राजा ललितादित्य को स्वागत में आरती की थाली लिए आती है, जिसे देखकर राजा उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। वह कमलावती से पूछते हैं कि यह कौन है, तो वह कहती यह चक्रमद्रिका है। ''आरती का थाल कमलावती लायी नवयुवती बहुत निखरे गौर रंग की आकृति बड़ी सुंदर जैसे साँचे में ढाली गई हो, आंखें बड़ी और मदकाती है।''[5] महारानी दुर्गावती इस उपन्यास के आरंभ में ही कुछ स्त्रियों के साथ रामचेरी का सौंदर्य द्रष्टव्य है–''नारियों के समूह में एक स्त्री थी सांवली सलोनी ठगने कद पुष्टकर भीड़ में कुछ गोरी लंबी छरहरी भी थी। एक बड़ी आँखें सीधी नाक सबल शरीर वाली युवती थी अगल–बगल वाली स्त्रियों में निकलकर मृगवाघ को अधिक निकट से देखने का प्रयास कर रही थी।''[6]

वर्मा जी के उपन्यास 'झाँसी की रानी' के सम्बन्ध में रामशरण मिश्र लिखते हैं कि, ''वर्मा जी का उपन्यास 'झांसी की रानी' केवल 1857 का जी नहीं अपितु समस्त क्रांतिकारी प्रयास का प्रतिनिधित्व करता हुआ अहिंसात्मक सत्याग्रह के इस एकांत श्रेय को ललकारा है।''[7] लक्ष्मीबाई, लाखी, झलकारीबाई, सागर सिंह जैसे देशभक्तों की मातृभूमि झाँसी ही है, जो लाखी जंगलों में शिकार करते नहीं थकती और अटल के यहाँ स्वाभिमानी जीवन जीती। वही रानी की देश–प्रेम की भावना कंधे से कंधा मिलाकर समर्थन करती है। लाठी का स्वाभिमान देश प्रेम की भावना को संबल प्रदान करता है आक्रमणकारियों द्वारा चारों ओर से घिर जाने पर घबराती नहीं अटूट साहस के साथ रहती है। ''इनको मार कर लूंगी इसी दृढ़ निश्चय के साथ तलवार को हाथ में उठाकर आतताई के पेट में ठोक देती है।''[8]

'भूवनविक्रम' उपन्यास में अनावृष्टि के आरोप में राजा रोमक को सत्ता से हटा दिया जाता है और जलवृष्टि होने पर राजा रोमक को पुनः राज्य का उत्तराधिकारी बनाये जाने का ऐलान होता है। इस पर अवसर पर वहाँ के गाँव स्त्रियाँ अयोध्या की जनता के स्वागत के लिए एकत्र होती हैं। वे अपने सिर पर कलश रखकर मंगल गीत गाकर उनकी आरती उतारती है। स्त्रियों के इस भव्य स्वरूप की उत्सव गाथा को उपन्यासकार ने बहुत मनोहर रूप दिया है। इनके न रहने पर यह उत्सव संभव लोक में संभव ही नहीं है। भारत की मंगल संस्कृति की ये आधारशिला हैं। इनके बिना लोक और जीवन सूखे पेड़ के समान है। निश्चय ही वर्मा जी के

उपन्यासों में पुरुष पात्रों की तुलना में नारी पात्र अधिक प्रबल एवं प्रमुख दृष्टिगोचर होते हैं। इसके पीछे वर्मा जी की अपनी नारी विषयक धारणा है। वे कहते हैं कि, ''स्त्री के भौतिक सौंदर्य और बाह्य आकर्षण तक वह सीमित नहीं रह जाती है उसमें दैवीयगुणों को देखना उन्हें भला लगता है नारी वाह्य सौन्दर्य और लावण्य के परे उसमें निहित अंतरिक्ष तेज की खोज तथा उसके वाह्य और आंतरिक गुणों में सामंजस्य स्थापित करना उनका लक्ष्य रहता है। उनकी यह नारी पुरुष से कहीं ऊँची है उनकी दृष्टि में पुरुष शक्ति है, तो नारी उसकी संचालक प्रेरणा।''[9]

वृंदावनलाल वर्मा का भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण सर्वविदित है। अतः नारी के चित्रांकन में भी संस्कृति की स्पष्ट छाप परिलक्षित है। उन्होंने प्राचीन एवं नवीन का समन्वय कर अभिनव नारी चरित्र की रचना की है। इतिहास प्रसिद्ध पात्रों के चतुर्दिक कथानक का ताना–बाना बुन वर्मा जी ने उस में आधुनिक समस्याओं एवं विचारधाराओं को समाहित कर अपनी उपन्यास कला का परिचय दिया। लक्ष्मीबाई, दुर्गावती आदि प्राचीन संस्कृति की निर्जीव पाषाण प्रतिमाएँ नहीं है, वे अपनी भव्यता एवं आदर्श से युक्त उनका चरित्र आज भी प्रेरणादायी हैं। इसके अतिरिक्त कचनार, मृगनयनी, लाखी, नूरबाई आदि नारी पात्र भी पुरुष पात्रों को प्रेरणा देते हुए संसार के संघर्षों में स्वयं जूझते हुए अपनी शक्ति का परिचय देते हैं। तारा प्रेमी के जीवन लक्ष्य उनकी पूजा–अर्चना की पावन प्रतिमा बनकर उभरती है। इन दोनों में दैवी तत्वों का प्रावधान है। साथ–ही दैवीय तत्व से मंडित तारा का स्वरूप गरिमा में एवं इस माननीय हो गया है। ''उसकी आँख शांत स्थिर बड़े–बड़े पलकों वाली बड़ी निर्मल थी। उन आंखों में किसी कोने में छल कपट या अविश्वास किंचित छाया भी नहीं मिल सकती थी। शरीर बहुत छोटा और कोमलता आकृति से ऐसी लगती थी जैसे देवी हो दुर्गा नहीं, किंतु ब्रह्म मुहूर्त के अधिष्ठात्री उषा ऋषियों के होम का आशीर्वाद विष्णु के पुजारियों की पूजा।''[10] इस तरह वर्मा जी ने नारी पात्रों के माध्यम से अपने रास्ते एवं सामाजिक विचारों का उद्घोष किया है। उनके सभी स्त्री पात्र विभिन्न वर्ग और विभिन्न मनोवृति के होते हुए भी अपनी स्वाभाविक ताकि पृष्ठभूमि पर खड़े हैं। ''वर्माजी के उपन्यासों के नारी पात्रों में रानियाँ, राजकुमारियाँ, दहेज में मिली दासियां, परिचारिकाएँ, स्त्री सेना, सहेलियाँ, ग्रामीण, कृषकपत्नी, अभिनेत्री और वैसे भी हैं।''[11]

युगीन परिस्थितियों का प्रभाव वृंदावनलाल वर्मा के साहित्य साधना पर पड़ा है। इसी कारण इनके ऐतिहासिक उपन्यासों के सृजन का मूल आधार नारी जागृति ही था। इनकी सूक्ष्म दृष्टि ने केवल नारी के बाह्य सौन्दर्य का ही वर्णन नहीं किया अपितु आंतरिक पक्ष के माध्यम से नारी के आदर्श गुणों को खोज निकाला। इन्हीं गुणों के कारण उनकी उपन्यासिक नारियाँ पुरूषों से कहीं ऊँची हैं। इस संदर्भ में देखें तो वर्मा जी की ऐतिहासिक उपन्यासों में प्रमुख नारी पात्रों में हेमवती, मालवती, तारा, गोमती, सुमन मोहिनी, लक्ष्मीबाई, जूही, मोतीबाई, सुंदर,

झलकारीबाई, छोटी महतरानी, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, कलावती, कचनार, अहिल्याबाई, सिंदूरी, हिमानी, गौरी, दुर्गावती आदि बहुत अधिक महत्व दिया है। इनके द्वारा नारी पात्रों को उचित स्थान प्रदान किया गया है। 'कचनार' उपन्यास की नारी गंम्भीए संयम और आत्मगौरव जैसे गुणों से सिक्त हैं। इस उपन्यास की नायिँ अपने अधिकार के लिए पुरुषों से डटकर प्रतिरोध करती हैं। यह उपन्यास इतिहास और परम्परा पर आधारित है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है, घटनाएँ भी सत्य हैं। किन्तु समय और स्थान में ऐतिहासिकता का आग्रह नहीं है। इसमें एक साधारण नारी कचनार के सतत संघर्षशील तथा संयमित जीवन का चित्रण है। इसमें कचनार और कलावती दोनों अनुपम सुंदरी यदि कलावती कमल तो कचनार क़टीला गुलाब। कचनार को पतिता का जीवन स्वीकार नहीं, उसकी दृष्टि में नारीत्व की सुरक्षा स्त्री को हर हाल में करनी चाहिए। वह राजा दिलीप सिंह से कहती है कि, ''मेरे साथ भाँवर डालिए मुझको अपनी पत्नी की प्रतिष्ठा दीजिए, अपनी जीवन सहचरी बनाइए।''[12] साफ तौर पर इनके उपन्यासों की नारियाँ चारित्रिक और नैतिकता की दृष्टि से भारतीय नारीत्व को प्रतिनिधित्व करती हैं। ये वीर, साहसी, बुद्धिमान और त्यागी हैं। अपने नारीत्व पर आँच आती देख कर अपने जीवन को समर्पित कर देने की क्षमता उनमें है।

भारतीय संस्कृति के पोषक वृंदावनलाल ने स्त्रियों को एक नई चेतना के साथ कृतियों को रेखांकित करने का प्रयास किया है। इसी कारण उनके नारी पात्र भारतीय संस्कृति के उदात्त गुणों से भरपूर उनमें दानशीलता, दयालुता, उदारता, त्याग, क्षमा, दृढ़ता, उत्साह, विश्वास आदि गुणों का समावेश देखा जा सकता है। लक्ष्मीबाई की उदारता हृदय स्पर्शनी है, अपने शत्रु अंग्रेजों की स्त्रियों एवं बच्चों की दयनीय स्थिति से द्रवित होकर वह तत्काल उनके लिए खाद्य सामग्री भी भिजवाती है। इसी प्रकार अवंतीबाई अंग्रेज बालकों को उसके परिजनों के पास पहुँचा कर अपनी दयालुता का परिचय देती है। मृगनयनी का त्याग किसी से छिपा नहीं है। ''वह अपने पुत्र को राज्यन दिलवाकर सुमन मोहिनी के पुत्र को राज्य का उत्तराधिकारी बनवाती है।''[13] इसी क्रम में कचनार महलों का त्याग कर छावनी का कठोर जीवन स्वीकार करती है। मोतीबाई, जूही तथा सुंदरा वैवाहिक सुख का परित्याग कर रंगभूमि में जा खड़ी होती हैं। इस प्रकार वह समस्त नारी पात्र अपनी नैतिक उच्चता का परिचय देती हैं। वर्मा जी ने अपने सामाजिक उपन्यास में नारी को अबला तथा स्वच्छंद वातावरण से मुक्त दोनों रूपों में चित्रित किया है। 'लगन' उपन्यास की रामा चाहते हुए भी अपने प्रेमी देवसिंह से अपने प्रेम का इजहार नहीं कर पाती। रामा अपनी सखी सुभद्रा से कहती है कि, ''मेरे चाहने न चाहने का सवाल ही नहीं, घर के लोग जो निर्णय कर देंगे सिर के बल मानना पड़ेगा।''[14]

बदलते परिवेश में नारियों की स्थिति में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक ही था। इसी का प्रभाव इनके उपन्यासों में नारी की तद्युगीन परिस्थितियों पर दिखाई देता है। विभिन्न परिस्थितियों में वर्मा जी के साहित्य की अधिकांश नारियाँ

इतिहास से प्राण ग्रहण कर जीवन के प्रति अपना स्वस्थ और सशक्त दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं तथा अपने तेजस्वी समाज की धारणा को बदलती है। उनका आत्मबल अत्यधिक प्रबल है, ''वह शक्ति तथा साहस की साक्षात प्रतिमाएँ हैं। वे पर्दे के पीछे छिपी असहाय निर्बल तथा कोमल अबलाएँ नहीं है, कंधे से कंधा मिलाकर पुरुष के साथ संसार के कष्टों तथा विपत्तियों का साहस के साथ सामना करती हैं तथा रण–प्रांगण में शत्रु के छक्के छुड़ा देने की क्षमता रखती हैं।''[15]

इस प्रकार उपन्यासकार वृंदावनलाल वर्मा ने प्राचीन और नवीन का समन्वय कर अभिनव ढंग से नारी चित्रण किया है। इन्होंने नारी के प्रमुख तत्व सुंदरी प्रेम कर्तव्य कर्मठता और देश–प्रेम आदि को प्रमुखता से चित्रित कर बुंदेलखंड की नारियों का गौरवपूर्ण चित्रण किया है। लक्ष्मीबाई को केवल इतिहास के माध्यम से सारा देश जान पाता किन्तु वर्मा जी के उपन्यास की नारियाँ आज जन–जन की श्रद्धा की पात्र बन चुकी है। इस प्रकार वर्मा जी के स्त्री पात्र जहाँ एक ओर भारतीय संस्कृति की उदात्त गुणों से युक्त हैं, वहीं उनमें ऐसे गुण भी विद्यमान हैं जो उन्हें नायक से देवत्व पर प्रतिष्ठित करते हैं। ''नारी विषयक उक्त अवधारणा में वृंदावन लाल वर्मा जी द्वारा अपने उपन्यास में वर्णित नारी पात्रों की स्थिति पर विचार किया जाए तो हम यही पाते हैं कि उनके उपन्यासों के अधिकांश नारियाँ इतिहास से प्राणग्रहणकर जीवन के प्रति अपना सशक्त दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं एवं अपने प्रभावी व्यक्तित्व द्वारा समाज की धारणा में परिवर्तन ला देती, उनका मनोबल बढ़ा हुआ है।''[16]

वृंदावनलाल वर्मा की विचारधारा उनके उपन्यासों से स्पष्ट ज्ञात हो जाती है। इनकी दृष्टि सर्वदा राष्ट्र के पुनर्निर्माण की ओर रही है। भारत के पतन के मूल कारण रूढ़ि–जर्जर समाज को इन्होंने अपनी सभी प्रकार की स्त्रियों के शौर्य की प्रयोगशाला बनाया है तथा सामाजिक इनको सामाजिक कुरीतियों से मुक्त करने का प्रयास किया है। उपन्यासों नारियाँ श्रम के महत्त्व की प्रबल पोषक हैं। ये मानव जीवन के लिए प्रेम को एक आवश्यक तत्त्व मानती हैं। यही नहीं, इनके विचारों से प्रेम एक साधना है, जो साधक को सामान्य भूमि से उठाकर उच्चता की ओर ले जाती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि वृंदावनलाल वर्मा के समग्र उपन्यास साहित्य में मुख्यतः सामाजिक एवं ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी पात्र के सभी गुणों का सांगोपांग चित्रण किया गया है। इन्होंने उपन्यास के माध्यम से नारियों की कर्मठता, दृढ़ता, सहनशीलता, प्रेम, साहस, सरलता आदि को चित्रित किया गया है। वर्मा जी का भारतीय साहित्य संस्कृति के प्रति आकर्षण रहा है। नारी के चित्रांकन में भी उनका आकर्षण स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है। उन्होंने प्राचीन और नवीन का समन्वय स्थापित कर चुकी है। उन्होंने नारी के प्रतिष्ठा तथा देश को और देश का गौरवपूर्ण चित्रण किया है। इस प्रकार कहा जा सकता है

कि वर्मा जी के नारी पात्र जहाँ एक ओर भारतीय संस्कृति के उदात्त गुणों से युक्त हैं तो वहीं उनमें मानवीय गुण भी विद्यमान हैं, जो उन्हें मानव से देवत्व पद पर प्रतिष्ठित करते हैं। निश्चित रूप से वर्मा जी के उपन्यासों में चाहे वह ऐतिहासिक हो या सामाजिक दोनों उपन्यासों स्त्रियों का भरपूर सम्मान रहा है एवं स्त्रियों को उचित स्थान प्रदान किया गया है। इनके विचार से पुरूष समाज का मस्तिष्क है तो नारी हृदय है। साथ–ही नारी समाज की सूत्रधारिणी भी है।

संदर्भ सूची–

1 वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, डॉ. प्रभु दयाल शर्मा, पृ. 108

2 उपन्यासकार वृंदावन लाल वर्मा, डॉ. शशिभूषण सिंहल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 218

3 गढ़कुण्डार, वृंदावन लाल वर्मा, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड 29/30, पिशाच मोहन, वाराणसी, पृ. 167

4 गढ़कुण्डार, वृंदावन लाल वर्मा, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड 29/30, पिशाच मोहन, वाराणसी, पृ. 136

5 ललितादित्य, वृंदावन लाल वर्मा, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड 29/30, पिशाच मोहन, वाराणसी, पृ. 172

6 गढ़कुण्डार, वृंदावन लाल वर्मा, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड 29/30, पिशाच मोहन, वाराणसी, पृ. 103

7 उपन्यासकार वृंदावन लाल वर्मा, डॉ. शशिभूषण सिंहल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 215

8 बुंदेलखंड की संस्कृति और साहित्य, श्री रामचरण मिश्र, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, संस्करण : 1969, पृ. 111

9 उपन्यासकार वृंदावन लाल वर्मा, डॉ. शशिभूषण सिंहल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 168

10 गढ़कुण्डार, वृंदावन लाल वर्मा, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड 29/30, पिशाच मोहन, वाराणसी, पृ. 153

11 वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों में चरित्र–चित्रण, डॉ निरल टोपनो, पृ. 70

12 कचनार, वृंदावन लाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी, उत्तर प्रदेश, पृ. 26

13 मृगनयनी, वृंदावन लाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी, उत्तर प्रदेश, पृ. 73

14 लगन, वृंदावन लाल वर्मा, समग्र–3, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड 29/30, पिशाच मोहन, वाराणसी, पृ. 233

15 वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नैतिकता, डॉ कमलेश कुमार, पृ. 66

16 उपन्यासकार वृंदावनलाल वर्मा, डॉ. शशिभूषण सिंहल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 123

****